GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-4, Issue-4, March 2015 Impact Factor: 2.389

ग्रन्थालय कंसोर्सिया : एक परिचय

डॉ0 राज कुमार सिंह
प्रवक्ता –पुस्तकालय लालता सिंह राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अदलहाट,मीरजापुर, उ0 प्र0, भारत.

सारांश ग्रंथालय कंसोर्सिया सूचना संसाधन सहभागिता के क्षेत्र में आधुनिक सूचना तकनीकी समाज में एक महत्वपूर्ण कदम है। बदलते शिक्षा पाठ्यक्रम व नये विषयों के समावेश से सूचना की माँग तेजी से बढ़ी है अब सूचना तकनीकी का उपयोग करके ही पाठकों की बढ़ती सूचना मॉग की पूर्ति की जा सकती है। पाठकों की बढ़ती सूचना माँग व सूचना स्रोतों के बढ़ते मूल्य ग्रन्थालयों को आपस में सहयोग करने के लिए बाध्य करते हैं और उसके परिणामस्वरूप सारे विश्व में अनेक ग्रन्थालय कंसोर्सिया बने हैं। इसी तरह भारत में भी इंजीनियरिंग, सूचना व तकनीकी के क्षेत्र में इण्डेसेट कंसोर्सिया बना वहीं विश्वविद्यालयों के लिए यू.जी.सी. इंफोनेट कंसोर्सिया बनाया गया।

इस तरह के सामूहिक प्रयासों से सभी लाभान्वित होते हैं चाहे मिलकर सूचना सामग्री क्रय करना हो, या सूचना का आदान–प्रदान करना हो या शिक्षा एव प्रशिक्षण देना हो। संयुक्त प्रयास से कम आर्थिक संसाधनों में अधिक सूचना सामग्री क्रय की जा सकती है जिसका लाभ कंसोर्सिया के सभी सदस्य मिलकर उठा सकते हैं।

भारत के अनेक विश्वविद्यालय में अभी भी समुचित इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है जिसके माध्यम से सूचना स्रोतों का उपयोग किया जा सके। अतः यू.जी.सी. के इंफोनेट कार्यक्रम में सदस्यों को सूचना स्रोतों के साथ–साथ अधिक इन्टरनेट (High Speed Internet Accesss) सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

पस्तावना

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इन्फलिबनेट व अरनेट इण्डिया ने मिलकर संयुक्त प्रयास किया व विश्वविद्यालयों से संकल्प पर हस्ताक्षरित करवाया। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर बहुउद्देशीय यूजीसी–इंफोनेट कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत सभी विश्वविद्यालय, अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं उसके क्षेत्रीय कार्यालय, अन्तर विश्वविद्यालयी केन्द्र आदि शामिल किये गये हैं। इन सभी को एक ही नेटवर्क से जोड़ा जायेगा जिसमें अरनेट इण्डिया सहायता करेगी।

अरनेट इण्डिया तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बीच अप्रैल, 2002 में एक अनुबन्ध हुआ जिसके तहत अरनेट विश्वविद्यालय को हार्डवेयर आदि उपलब्ध करायेगा तथा उसकी नियमित देखभाल करेगा। जबकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यह निर्णय लेगी कि किस विश्वविद्यालय को किस तरह की कनेक्टिविटी उपलब्ध करायी जाये। प्रत्येक विश्वविद्यालय का यह दायित्व होगा कि वह अपने विश्वविद्यालय परिसर में कैम्पस नेटवर्क से सभी को सूचना सेवा की सुविधा उपलब्ध कराये।

कन्सोर्सिया की आवश्यकता (Need of Consortia)

ग्रन्थालयों ने कंसोर्सिया की आवश्यकता इसलिए महसूस की क्योंकि :

(1) अधिकांश पत्रिकाएँ ऑनलाइन उपलब्ध हैं।
(2) संग्रह की अपेक्षा उनका उपयोग ज्यादा जरूरी है।
(3) कम खर्च में अधिक पत्रिकायें क्रय कर पाना सम्भव है।
(4) मूल्य बढ़ रहे हैं तथा आर्थिक संसाधान कम हो रहे हैं।

अतः कंसोर्सिया ही एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से शिक्षा तथा शोध हेतु पाठकों को अधिक जानकारी कम खर्च में उपलब्ध करायी जा सकती है और यही कंसोर्सिया का उद्देश्य भी है।

कंसोर्सिया की उपयोगिता (Use of Consortia)

कंसोर्सियाओं की उपयोगिताओं की गणना निम्नलिखित प्रकार की जा सकती है–

(1) ग्रन्थालय तथा अन्य सूचनाा संसाधनों का विनिमय तथा उपयोग।
(2) सूचना संसाधनों का समूह के लिए साझा रूप से क्रय।
(3) कम आर्थिक संसाधनों में अधिक तथा विविध प्रकार की सामग्री क्रय करना।
(4) सन्तुलित सूचना संग्रह विकसित करना।
(5) शिक्षा प्रशिक्षण तथा शोध को गुणवत्ता में सुधार लाना।
(6) सूचना स्रोतों की सभी को समान रूप से उपलब्धता।

कंसोर्सिया के प्रकार (Types of Consortia)

विश्व स्तर पर विभिन्न ग्रन्थालयों ने लगभग 150 से अधिक ग्रन्थालय कंसोर्सिया बनाए। यह कंसोर्सिया मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं–

(1) होमोजीनस

(2) हेट्रोजीनस।

होमोजीनस कंसोर्सिया इसमें एक ही प्रकार के ग्रन्थालय (समान तरह की सूचना सेवा वाले) आपस में सूचना संसाधनों का आदान–प्रदान साझा क्रय करके संग्रह विकसित करना तथा पाठकों की सूचना आवश्यकताओं को मिलजुल कर पूरा करने का कार्य करते है। उदाहरण के लिए–विश्वविद्यालयी ग्रन्थालयों या मेडीकल ग्रन्थालयों या विधि ग्रन्थालयों का कंसोर्सिया।

हेट्रोजीनस कंसोर्सिया– इसमें विभिन्न तरह के ग्रन्थालय जो कि मुख्य रूप से एक ही स्थान विशेष पर होते हैं आपस में अपनी सूचना आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए एकसाथ आ जाते हैं। इस तरह हेट्रोजीनस कंसोर्सिया का निर्माण हो जाता है। उदाहरण के लिए–किसी शहर स्थिति विभिन्न तरह के ग्रन्थालयों का कंसोर्सिया।

भारत में ग्रन्थालय कंसोर्सिया की स्थिति (Library Consortia Scenario in India)

विश्व के अधिकांश, देशों म विश्वविद्यालयी ग्रन्थालय, विशिष्ट ग्रन्थालय, तकनीकी ग्रन्थालय, मेडीकल ग्रन्थालय, विधि ग्रन्थालय आदि ने आपस में मिलकर ग्रन्थालय कंसोर्सिया बनाए जिनकी संख्या लगभग 150 से अधिक है। भारत में भी इस दिशा में प्रगति हुई। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के सहयोग से तकनीकी ग्रन्थालयों जिसमें आई.आई.टी., रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, आई.आई.आइ.टी., आई.आई.एम. आदि शामिल हैं का कंसोर्सिया बनाया गया जिसे इण्डेस्ट (इण्डियन नेशनल डिजिटल ग्रन्थालय इन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी) के नाम से जाना जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयाग ने विशविद्यालय ग्रन्थालयों के कंसोर्सिया का निर्माण किया जिसे यू.जी.सी. इंफोनेट के नाम जाना जानते हैं। इसके अलावा भारत में सी. एस.आई.आर. के ग्रन्थालयों का भी एवं महानगरीय ग्रन्थालयों के हेट्रोजीनस कंसोर्सिया (डेलनेट, केलिवनेट, मेलिवनेट, पुनेट) कार्य कर रहे हैं।

प्रकाशन भी अपने प्रकाशनों को प्रिंटिंग तथा ऑनलाइन रूप में एकसाथ प्रकाशित कर रहे हैं तथा अपने प्रकाशनों को कंसोर्सिया के माध्यम से बेचना चाहते हैं जिससे उनकी पहुँच शीघ्रता से अधिकतम पाठकों तक हो सके।

यू.जी.सी. इंफोनेट (U.G.C. Infonet)

वर्तमान समय में बदलते शिक्षा पाठ्यक्रम तथा नये विषयों के समावेश से सूचना की माँग तेजी से बढ़ी है वहीं दूसरी ओर ग्रन्थालय के पास आर्थिक संसाधन कम हुए हैं जिससे उनकी सूचना स्रोतों को क्रय करने की क्षमता कम हुई है। इसी बात को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने यू.जी.सी. इंफोनट नाम का बहुउद्देशीय कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत सभी विश्वविद्यालय, अनुसंसाधन तथा विकास केन्द्र, अन्तर्विश्वविद्यालयी केन्द्र आदि को शामिल किया गया है, जिन्हें एक ही नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है।

यू.जी.सी. इंफोनेट कार्यक्रम का सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इनफिलबनेट सेंटर तथा अरनेट इण्डिया सम्मिलित रूप से प्रयासरत हैं।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम चरण में 50 विश्वविद्यालयों को ऑनलाइन डाटाबेस तथा पत्रिकायें हाइस्पीड इन्टरनेट कनेक्शन के साथ उपलब्ध की जा रही है तथा बाद म सभी राज्य ग्रन्थालय को उपलब्ध होगी, इस कार्यक्रम से सूचना का तेजी से आदान–प्रदान जिससे शिक्षा तथा शोध कार्य में प्रगति तथा गुणवत्ता में सुधार होगा। साथ ही सूचना संसाधनों के आदान–प्रदान में इन्टरनेट के उपयोग से तेजी आयेगी।

यू.जी.सी.– इंफोनेट के तहत प्रथम चरण में 50 विश्वविद्यालयों को निम्नलिखित पत्रिकाएँ/डाटाबेस उपलब्ध कराये गये–

प्रकाशक का नाम	पत्रिकाएँ + डाटाबेस	समयावधि	विवि की संख्या
1. अमेरिकन केमीकल सोसाइटी	31	1995	50
2. रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री	23 + 6	प्रारम्भ से	50
3. इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स	36	प्रारम्भ से	50
4. अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स +	19	1955–	50
अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी	08		
5. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस	72	1955	50
6. नेचर ऑनलाइन	01	1955	50
7. साइंस ऑनलाइन	01	1955	50
8. प्रोजेक्ट म्यूज	222	1997	50
9. एनुअल रिव्यूज	29	1994	50
10. बॉयोलोजिकल एब्जट्रेक्ट	01	1969	50
11. कैमिकल एब्सट्रेक्ट	01	1907	10
12. टेलर एण्ड फ्रांसिस पब्लिकेशन्स	1190	1995	50
13. जे. स्टोर : जर्नल आर्कईव्स	290	2000 से पूर्व	26

इण्डेस्ट कंसोर्सिया (Indest Consortia)

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मनत्रालय ने विशेषज्ञों की रिपोर्ट के आधार पर इण्डेस्ट (इण्डियन नेशनल डिजिडल ग्रन्थालय इन इंजीनियरिंग साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी) कंसोर्सिया का निर्माण किया जिसके अन्तर्गत इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस, विज्ञान, सूचना तथा तकनीकी से सम्बन्धित शिक्षण संस्थानों को सम्मिलित किया गया है। इस कार्य में आई.आई.टी., नई दिल्ली की प्रमुख अग्रणी भूमिका है। इसमें प्रमुख रूप से सभी आई. आई.टी., एन.आई.टी., इंजीनियरिंग कॉलेज, आई.आई.एस.सी. आदि सम्मिलित हैं। इसके अलावा ऑल इण्डिया फॉर टेक्नीकल एजूकेशन से वित्तीय सहायता या मान्यता प्राप्त इंजीनियरिंग कॉलेज व यू से मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान भी सदस्य हो सकते हैं।

इण्डेस्ट कंसोर्सिया सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विशेष अनुशंसा पर विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक रिसोर्सिज को पब्लिशर्स वेबसाइट द्वारा ही संस्थानों को उपलब्ध कराया गया है जो कि निम्नलिखित हैं–

IEL Online (IEEE/IEE Electronic Library)
Elsevier Science : Science Direct
ACM Digital Library
Ideal Library (Academic Press)
Applied Science & Technology Plus (Wilson/ UMI)
ACME
ACSE
Springer Link
Emerald Journals
JCCC (J- gate Custom Content Consortia)

भारत में कंसोर्सिया के क्षेत्र में इण्डेस्ट कंसोर्सिया तथा यू.जी.सी. इंफोनेट कंसोर्सिया नाम अग्रणी है। इस तरह के साामूहिक प्रयास से सभी लाभान्वित हो रहे हैं। ऑनलाइन स्रोतों की उपलब्धता तथा हाईस्पीड इन्टरनेट सुविधा से शिक्षा तथा शोध कार्य में तेजी वृद्धि होने की आशा है क्योंकि अल्प कार्यकाल में इसने अपनी महत्ता सिद्ध की है। कंर्सोसिया भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के 2020 के विकसित भारत के सभी अवसर पर 28 दिसम्बर, 2003 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रपति ए.पी.जी. अब्दुल कलाम ने ई–जर्नल्स का पैकेज राष्ट्र को समर्पित करते हुए सूचना प्राप्ति कि दिशा में इसे स्वतन्त्रता का दूसरा संघर्ष (Second Struggle for Freedom) निरूपित किया था तथा आशा व्यक्त थी कि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता से सामाजिक एकता व आर्थिक सम्पन्नता समाज में आ सकती है।

वर्तमान समय में संयुक्त प्रयास से ही सीमित आर्थिक संसाधनों में अधिक सूचना का लाभ कंसोर्सिया के सभी सदस्य मिलकर उठा रहे हैं। यू.जी.सी. इंफोनेट कार्यक्रम सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इनफिलबनेट सेन्टर तथा इंटरनेट का सम्मिलित प्रयास सराहनीय तथा अनुकरणीय है। ग्रन्थालय कंसोर्सिया सभी को सूचना समान प्राप्ति एवं शिक्षा–शोध–अनुसंधान विकास कार्यों में सहायक है। शोध के परिणामों से देश प्राप्ति के पथ पर अग्रसर होगा तथा देशवासियों के जीवन स्तर में सुधार होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

PATHAK (S K) and DESHPANDE (N eela) : Importance of Consortia in Developing Counteis- An Indian Scenario. The International Information & Library Review.36., 2004. 227-231.

ARORA (Jagdish) and AGRAWAL (Pawan): Indian Digital Library in Engineering Science and Technology (INDEST) Conortium : consortia based subscription to electronic resouces for technical education system in India : a Government of India Initiative. Proceeding of CALIBER 2003.p. 271-290.

PANDIAN (M P) and others : Digital Library System: Consortia- based Approach. The Esectronic Library, 20 (3) 2002.211-214.

BISWAS (B C) and DASGUPTA (S K) : O pportunities for Libraries in Managing and Resource Sharing through Consortia : A New Challenge for Indian Librarians.

http.// dlist.sir.arizona.edu/archive/00000249/01/4.hm

International Coalition of Library Consortia (ICOLC)

http.//www.library.yale.edu/consortia/

BROTHY (Peter) and others: Libraries without Walls, the delivery of library services to distant users. London, Facet, 2002.